

कितने मोर्चे

वं

वन्दना यादव के इस उपन्यास की पृष्ठभूमि सेना की है। लेखिका के पति भारतीय सेना में कर्नल हैं और उनकी पोस्टिंग कश्मीर, असम और सिक्किम की सीमाओं पर होती रही है। पीछे वे अकेली दिल्ली में रह कर अपनी दो बेटियों को 'सिंगल पैरेंट' की तरह पालती रही हैं। उन्होंने इस संघर्ष को न केवल जिया है, बल्कि अपने उपन्यास में पूरी शिद्दत से उतारा भी है।

चौधरी विहार इस उपन्यास में एक समानांतर जीवन के रूप में उभर कर आता है। यहां के बच्चे सिविलियन वातावरण में पलते हैं और सैनिक पिता के छुट्टी पर घर आने पर असहज अनुभव करते हैं और उसके वापस बॉर्डर पर जाने की प्रतीक्षा करते हैं। चौधरी विहार में जीवन का हर पहलू उभर कर सामने आता है। यहां पड़ोसियों कि खारबाजी भी है तो आपसी जलन भी है। सेना के अस्पताल में संघर्ष करती माएं हैं, तो घरों की मरम्मत करवाती गृहणियां भी हैं। यहां तक कि बड़े अफसरों की पत्नियों की राजनीति भी उपन्यास की विविधता का हिस्सा बनती है। घर की छोटी-छोटी जरूरतों के लिए किस तरह पीछे छूट गई पत्नियां संघर्ष करती हैं, उनकी गाथा है वंदना यादव का यह उपन्यास।

हिंदी में शायद पहली बार सीमा पर तैनात सैनिकों के परिवारों के छोटे-छोटे महायुद्धों का दस्तावेज बन सकता है यह उपन्यास। एक नया थीम है और उपन्यास का कोई पारंपरिक नायक या नायिका नहीं है। चौधरी विहार और सैनिकों के परिवारों का जीवन ही इस उपन्यास का केंद्र बिंदु है।

कितने मोर्चे : वंदना यादव; अनन्य प्रकाशन, ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली; 350 रुपए।

